215hi01

पाठ्यक्रम I

अधिकतम अंक	अध्ययन के घंटे
12	25

व्यवसाय-परिचय

हम व्यावसायिक वातावरण में रहते हैं। यह समाज का एक अनिवार्य अंग है। यह व्यावसायिक क्रियाओं के विस्तृत नैटवर्क के माध्यम से विभिन्न प्रकार की वस्तुएं तथा सेवाएं उपलब्ध कराकर हमारी आश्यकताओं की पूर्ति करता है। यह पाठ्यक्रम अध्ययनकर्ताओं को व्यवसाय के बारे में जागरूक करने के उद्देश्य से बनाया गया है। ताकि वे व्यवसाय के महत्व, व्यवसाय के उद्देश्य (क्षेत्र), तथा विभिन्न प्रकार की व्यावसायिक गतिविधियों की जानकारी प्राप्त कर सकें तथा यह भी जान सके कि क्या-क्या नये-नये विकास हो रहे हैं; जैसे - ई-वाणिज्य तथा विभिन्न प्रकार के हित धारकों के उत्तरदायित्वों को समझ सकें।

पाठ 1 : व्यापार की प्रकृति एवं क्षेत्र

पाठ 2 : उद्योग तथा वाणिज्य

टिप्पणी

1

व्यवसाय की प्रकृति तथा क्षेत्र

जब हम अपने आसपास ध्यान देते हैं तो देखते हैं कि ज्यादातर लोग किसी न किसी काम में संलग्न हैं। अध्यापक विद्यालयों में पढ़ाते हैं, किसान खेतों में काम करते हैं, मजदूर कारखानों में काम करते हैं, चालक गाड़ियाँ चलाते हैं, दुकानदार सामान बेचते हैं, चिकित्सक रोगियों को देखते हैं आदि। इस तरह बारहों महीने हर आदमी दिन भर, या कभी-कभी रात भर, किसी न किसी काम में व्यस्त रहता है। लेकिन अब प्रश्न यह उठता है कि हम सब इस तरह किसी न किसी काम में अपने आपको इतना व्यस्त क्यों रखते हैं? इसका सिर्फ एक ही उत्तर है, अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए। इस तरह काम करके या तो हम अपने विभिन्न उत्तरदायित्वों की पूर्ति करते हैं या धन अर्जित करते हैं, जिससे कि हम अपनी आवश्यकता की वस्तुएँ तथा सेवाएँ खरीद सकें।

आइए, इस पाठ में हम उन विभिन्न क्रियाओं के बारे में अध्ययन करें, जिनमें हम सब अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए व्यस्त रहते हैं। यहाँ व्यवसाय को हमें एक मानवीय क्रिया के रूप में विस्तार से जानना है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- मानवीय क्रियाओं को परिभाषित कर सकेंगे;
- आर्थिक तथा अनार्थिक क्रियाओं में अन्तर्भेद कर सकेंगे;
- 'व्यवसाय' शब्द को परिभाषित कर सकेंगे;
- व्यवसाय के विभिन्न लक्षणों की पहचान कर सकेंगे;
- व्यवसाय के उद्देश्यों की व्याख्या कर सकेंगे;
- व्यवसाय के सामाजिक उत्तरदायित्वों की व्याख्या कर सकेंगे; और
- प्रदूषण के प्रकारों, कारणों तथा प्रभावों का वर्णन कर सकेंगे और पर्यावरणीय प्रदूषण कम करने में व्यवसाय की भूमिका की व्याख्या कर सकेंगे।

1.1 मानवीय क्रियाएँ

मनुष्य द्वारा की जाने वाली विभिन्न क्रियाएँ मानवीय क्रियाएँ कहलाती हैं। इन सभी क्रियाओं को हम दो वर्गों में बाँट सकते हैं- (i) आर्थिक क्रियाएँ, और (ii) अनार्थिक क्रियाएँ।

(i) आर्थिक क्रियाएँ

जो क्रियाएँ धन अर्जित करने के उद्देश्य से की जाती हैं, उन्हें आर्थिक क्रियाएँ कहते हैं। उदाहरण के लिए, किसान खेत में हल चलाकर फसल उगाता है और उसे बेचकर धन अर्जित करता है, कारखाने अथवा कार्यालय का कर्मचारी अपने काम के बदले वेतन या मजदूरी प्राप्त करता है, व्यापारी वस्तुओं के क्रय विक्रय से लाभ अर्जित करता है। ये सभी क्रियाएँ आर्थिक हैं।

मानवीय क्रियाएं

(ii) अनार्थिक क्रियाएँ

जो क्रियाएँ धन अर्जित करने की अपेक्षा, संतुष्टि प्राप्त करने के उद्देश्य से की जाती हैं उन्हें अनार्थिक क्रियाएँ कहते हैं। इस तरह की क्रियाएँ, सामाजिक उत्तरदायित्वों की पूर्ति, मनोरंजन या स्वास्थ्य लाभ के लिए की जाती हैं। लोग पूजा स्थलों पर जाते हैं, बाढ़ अथवा भूकंप राहत कोष में दान देते हैं, स्वास्थ्य लाभ के लिए स्वयं को खेलकूद में व्यस्त रखते हैं, बागवानी करते हैं, रेडियो सुनते हैं, टेलीविजन देखते हैं या इसी तरह की अन्य क्रियाएँ करते हैं। ये कुछ उदाहरण अनार्थिक क्रियाओं के हैं।

आर्थिक तथा अनार्थिक क्रियाओं में अंतर

आधार	आर्थिक क्रियाएँ	अनार्थिक क्रियाएँ
i. उद्देश्य	ये आर्थिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए की जाती हैं।	ये सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए की जाती हैं।
ii. लाभ	इनसे धन और संपत्ति बढ़ती है।	इनसे संतुष्टि और प्रसन्नता प्राप्त होती है।
iii. अपेक्षा	लोग इनसे लाभ या धन की आशा करते हैं।	लोग इनसे लाभ या धन की आशा नहीं करते।
iv. प्रतिफल	ये विवेकशील सोच द्वारा निर्देशित होती हैं क्योंकि इनमें विरल आर्थिक संसाधन, जैसे- भूमि, श्रम, पूँजी आदि संलग्न होते हैं।	ये भावनात्मक कारणों से अभिप्रेरित होती हैं। कोई आर्थिक प्रतिफल संलग्न नहीं होता।

पाठगत प्रश्न 1.1

I. नीचे दिए गए वाक्यों में से सही के सामने सही और गलत के सामने गलत लिखिए :

i. डॉक्टर जब अपने क्लीनिक में मरीज का इलाज करता है तो वह आर्थिक क्रिया होती है।

ii. माँ अपने बच्चे के लिए कपड़ा सिलती है तो वह आर्थिक क्रिया में संलग्न होती है।

iii. दर्जी किसी ग्राहक का कपड़ा सिल रहा है तो वह आर्थिक क्रिया है।

iv. मंदिर के सामने बैठे भिखारियों को भोजन बाँटना एक अनार्थिक क्रिया है।

v. जब सचिन तेंदुलकर विश्व कप क्रिकेट खेल रहा होता है तो अनार्थिक क्रिया में संलग्न होता है।

II. नीचे दी गई क्रियाओं में से आर्थिक और अनार्थिक क्रियाएँ छांटिए :

i. दोस्तों के साथ फुटबाल खेलना।

ii. स्कूल में पढ़ाना।

iii. किसी बीमार रिश्तेदार की देखभाल करना।

iv. टेलिविजन देखना।

v. स्थानीय बाजार में फल तथा सब्जियां बेचना।

vi. किसी घायल व्यक्ति के लिए रक्त दान करना।

vii. कार्यालय में नौकरी करना।

1.2 आर्थिक क्रियाओं के प्रकार

आमतौर पर आर्थिक क्रियाएँ धन अर्जित करने के उद्देश्यों से की जाती है। साधारणतया लोग इस तरह की क्रियाओं में नियमित रूप में संलग्न होते हैं, जिसे आर्थिक क्रिया कहा जाता है।

(i) **व्यवसाय :** व्यवसाय का अर्थ है एक ऐसा धंधा, जिसमें धन के बदले वस्तुओं अथवा सेवाओं का उत्पादन, विक्रय और विनिमय होता है। यह नियमित रूप से किया जाता है तथा इसे लाभ कमाने के उद्देश्य से किया जाता है। खनन, उत्पादन, व्यापार, परिवहन, भंडारण, बैंकिंग तथा बीमा आदि व्यावसायिक क्रियाओं के उदाहरण हैं।

व्यवसाय

(ii) **पेशा :** कोई भी व्यक्ति हर क्षेत्र का विशेषज्ञ नहीं हो सकता। इसलिए हमें दूसरे क्षेत्रों में विशेषज्ञ व्यक्तियों की सेवाओं की आवश्यकता पड़ती है। उदाहरण के

लिए, हमें अपने इलाज के लिए डॉक्टर की और कानूनी सलाह के लिए वकील के सहयोग की आवश्यकता पड़ती है। ये सभी व्यक्ति पेशे से जुड़े लोग हैं। इस प्रकार पेशे का अभिप्राय ऐसे धंधे से है, जिसमें उस पेशे के विशेष ज्ञान और प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है तथा प्रत्येक पेशे का मुख्य उद्देश्य सेवा प्रदान करना होता है। एक पेशेवर निकाय प्रत्येक पेशे का नियमन करती है। इन पेशेवरों की आचार संहिता होती है, जिसे सम्बन्धित पेशेवर इकाई द्वारा विकसित किया जाता है।

पेशा

(iii) **नौकरी :** नौकरी का अर्थ, एक ऐसे धंधे से है जिसमें व्यक्ति नियमित रूप से दूसरों के लिए कार्य करता है और उसके बदले में वेतन अथवा मजदूरी प्राप्त करता है। सरकारी कर्मचारी, कंपनियों के कार्यकारी, अधिकारी, बैंक कर्मचारी, फैक्टरी मजदूर आदि नौकरी में संलग्न माने जाते हैं। नौकरी में काम के घंटे मजदूरी/वेतन की राशि तथा अन्य सुविधाएं, यदि हैं, के सम्बंध में शर्तें होती है। सामान्यत: नियोक्ता इन शर्तों को तय करता है। कोई भी व्यक्ति जो नौकरी चाहता है, उसे तभी कार्य करना आरम्भ करना चाहिए जबकि वह शर्तों से संतुष्ट हो। कर्मचारी का प्रतिफल निश्चित होता है तथा उसका भुगतान मजदूरी अथवा वेतन के रूप में किया जाता है।

नौकरी

व्यवसाय, पेशा और नौकरी में अंतर

अंतर का आधार	व्यवसाय	पेशा	नौकरी
1. कार्य की प्रकृति	ग्राहकों को धन के बदले वस्तुओं तथा सेवाओं की आपूर्ति।	कार्य के स्वनिर्णय सहित शुल्क के बदले विशिष्ट वैयक्तिक सेवाएँ।	स्वनिर्णय के बिना नियोक्ता के आदेशानुसार कार्य निष्पादित करना।
2. योग्यता	कोई न्यूनतम योग्यता की आवश्यकता नहीं।	विशेष क्षेत्र में शिक्षा एवं प्रशिक्षण आवश्यक।	सभी मामलों में विशिष्ट ज्ञान आवश्यक नहीं।
3. पूँजी	व्यवसाय की प्रकृति, आकार तथा पैमाने के अनुसार पूँजी निवेश आवश्यक।	स्थापना हेतु सीमित पूँजी आवश्यक।	पूँजी की आवश्यकता नहीं।

4. अभिप्रेरणा	ग्राहकों को वस्तुएँ बेचकर तथा सेवाएँ उपलब्ध करा-कर लाभ कमाना।	सेवाओं के प्रदान करने के बदले निर्धारित शुल्क। प्राप्त करना।	निर्धारित मजदूरी अथवा वेतन प्राप्त करना।
5. जोखिम	इसमें हानि या लाभ अनिश्चित हैं।	निर्धारित आय, कर्तव्य में कोताही का दायित्व।	नियमित, निर्धारित मजदूरी या वेतन, जोखिम नहीं।
6. आचार संहिता	कोई विशेष आचार संहिता नहीं।	पेशे के उच्च मानक बनाए रखने हेतु कड़ी पेशेगत आचार संहिता।	नौकरी की अनुबंधीय शर्तें।

पाठगत प्रश्न 1.2

I. उपयुक्त शब्दों का प्रयोग कर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

i. जब कोई व्यक्ति नियमित आर्थिक क्रिया में संलग्न होता है तो उस क्रियाकलाप को _____ कहते हैं।

ii. पेशेवर व्यक्ति के लिए किसी क्षेत्र विशेष में _____ और प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है।

iii. जब व्यक्ति किसी दूसरे के लिए नियमित रूप से कार्य करता है तो उस धंधे को _____ कहते हैं।

iv. पेशे और पेशेवर लोगों को नियंत्रित करने के लिए हर पेशागत निकाय एक _____ तैयार करती है।

v. कर्मचारियों के लिए नियम तथा शर्तों का निर्धारण _____ करता है।

II. कॉलम अ में दिए गए कथनों को कॉलम ब के साथ मिलान कीजिए :

कॉलम- अ		कॉलम- ब
i. व्यवसाय का प्राथमिक उद्देश्य होता है	क)	विशेष दक्षता
ii. पेशे का प्राथमिक उद्देश्य होता है	ख)	लाभ कमाना
iii. पेशे के लिए आवश्यक है	ग)	पेशा
iv. एक चार्टर्ड अकाउंटेंट का धंधा है	घ)	सेवा प्रदान करना

1.3 व्यवसाय का अर्थ

आपने देखा होगा कि बाजार में विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ उपलब्ध होती हैं। आपको जब और जिन वस्तुओं की आवश्यकता होती है, आप वे वस्तुएँ खरीद लाते हैं। क्या आप जानते हैं कि ये वस्तुएँ बाजार में कहाँ से आती हैं? वास्तव में इन वस्तुओं का उत्पादन कुछ विशेष स्थानों पर किया जाता है, जहाँ से कुछ लोग इन्हें लाकर बाजार तक पहुँचाते

हैं। उसके बाद ही हम अपनी आवश्यकताओं के अनुसार इन्हें खरीदते हैं, और इनका उपयोग कर पाते हैं।

इसके अतिरिक्त आपने ऐसे भी बहुत से व्यक्तियों को देखा होगा, जो यात्री तथा माल परिवहन, बैंकिंग, बीमा, विज्ञापन, बिजली आपूर्ति, टेलीफोन आदि जैसी विभिन्न क्रियाओं में लगे होते हैं। ये सभी सेवा संबंधी क्रियाएँ हैं, जिन्हें लोग अपनी आजीविका अर्जित करने के उद्देश्य से करते हैं।

व्यवसाय

उपरोक्त सभी क्रियाओं में, चाहे वह उत्पादन की हों, वितरण की हों, या वस्तुओं और सेवाओं के क्रय-विक्रय की हों, सबमें आर्थिक लाभ निहित होता है और ये सभी नियमित आधार पर की जाती है। इस प्रकार व्यवसाय का अर्थ, ऐसी मानवीय क्रियाओं से है, जिन्हें नियमित रूप से आर्थिक लाभ कमाने के उद्देश्य से उत्पादन, वितरण, वस्तुओं या सेवाओं के क्रय-विक्रय द्वारा सम्पन्न किया जाता है।

व्यवसाय को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है : **''व्यवसाय एक ऐसी क्रिया है, जिसमें लाभ कमाने के उद्देश्य से वस्तुओं अथवा सेवाओं का नियमित उत्पादन क्रय-विक्रय तथा विनिमय सम्मिलित है''।**

1.4 व्यवसाय की विशेषताएँ

व्यवसाय की निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं :

(i) **वस्तुओं तथा सेवाओं का लेन-देन :** व्यवसाय में लोग वस्तुओं अथवा सेवाओं के उत्पादन तथा वितरण कार्यों में संलग्न होते हैं। इन वस्तुओं में ब्रेड, मक्खन, दूध, चाय आदि जैसी उपभोक्ता वस्तुएं भी हो सकती हैं और संयन्त्र, मशीनरी, उपकरण आदि जैसी पूंजीगत वस्तुएँ भी। सेवाएँ- परिवहन, बैंकिंग, बीमा, विज्ञापन आदि रूपों में हो सकती हैं।

(ii) **वस्तुओं तथा सेवाओं का विक्रय अथवा विनिमय :** यदि कोई व्यक्ति अपने उपयोग के लिए या किसी व्यक्ति को उपहार देने के लिए कोई वस्तु खरीदता या उत्पादित करता है तो वह किसी प्रकार के व्यवसाय में संलग्न नहीं है। लेकिन जब वह किसी दूसरे व्यक्ति को बेचने के लिए किसी वस्तु का उत्पादन करता है अथवा खरीदता है तो वह व्यवसाय में संलग्न होता है। इस प्रकार व्यवसाय में क्रेता और विक्रेता के बीच वस्तुओं अथवा सेवाओं के उत्पादन अथवा क्रय में धन अथवा वस्तु (वस्तु विनिमय प्रणाली में) का विनिमय आवश्यक होता है। बिना विक्रय अथवा विनिमय के किसी भी क्रिया को व्यवसाय की संज्ञा नहीं दी जा सकती।

(iii) **वस्तुओं अथवा सेवाओं का नियमित विनिमय :** इसमें वस्तुओं का नियमित उत्पादन अथवा क्रय-विक्रय होना आवश्यक होता है। सामान्यतया एकाकी सौदे को

टिप्पणी

व्यवसाय की संज्ञा नहीं दी जा सकती। उदाहरण के लिए, यदि राजू अपनी पुरानी कार हरि को बेचता है तो इसे व्यवसाय नहीं कहा जाएगा, जब तक कि वह नियमित रूप से कारों के क्रय-विक्रय में संलग्न न हो।

(iv) **निवेश की आवश्यकता :** प्रत्येक व्यवसाय में भूमि, श्रम अथवा पूंजी के रूप में कुछ न कुछ निवेश की आवश्यकता होती है। इन संसाधानों का उपयोग विविध प्रकार की वस्तुओं अथवा सेवाओं के उत्पादन, वितरण और उपभोग के लिए किया जाता है।

(v) **लाभ कमाने का उद्देश्य :** व्यावसायिक क्रियाओं का प्राथमिक उद्देश्य लाभ के माध्यम से आय अर्जित करना है। बिना लाभ के कोई भी व्यवसाय अधिक समय तक चालू नहीं रह सकता। लाभ कमाना व्यवसाय के विकास और विस्तार की दृष्टि से भी आवश्यक होता है।

(vi) **आय की अनिश्चितता और जोखिम :** प्रत्येक व्यवसाय का उद्देश्य लाभ कमाना है। जब कोई व्यवसायी विभिन्न संसाधनों का निवेश करता है तो वह उसके बदले में कुछ न कुछ आय प्राप्त करना चाहता है। लेकिन उसके श्रेष्ठतम प्रयासों के बावजूद व्यवसाय में आय की अनिश्चितता बनी रहती है। कई बार उसे बहुत लाभ होता है, और कई बार ऐसा भी समय आता है, जब उसे भारी हानि उठानी पड़ती है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि भविष्य अनिश्चित है। व्यवसायी का आय को प्रभावित करने वाले तत्वों पर कोई नियंत्रण नहीं होता।

1.5 व्यवसाय विकास

हम सभी जानते हैं कि भारत की सांस्कृतिक धरोहर बहुत समृद्ध है। लेकिन शायद यह बहुत कम लोग जानते होंगे कि प्राचीन काल में भारत, अर्थव्यवस्था तथा व्यवसाय के स्तर पर बहुत ही विकसित देश था। यह बात ऐतिहासिक साक्ष्यों, खुदाई से प्राप्त प्रमाणों, साहित्य व लिखित दस्तावेज़ों से सिद्ध होती हैं। इन सबसे अधिक भारत की असीम धन संपत्ति से आकर्षित होकर विभिन्न विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा समय-समय पर हुए आक्रमण भी इस तथ्य को प्रमाणित करते हैं। प्राचीन भारतीय सभ्यता न केवल कृषि आधारित थी, बल्कि इसके आंतरिक व बाह्य व्यापार व वाणिज्य भी काफी उन्नत थे। व्यावसायिक जगत के विभिन्न क्षेत्रों में भारत का असीम योगदान है। उस समय के अन्य देशों में प्रचलित व्यवसायों से तुलना करने पर हम पाते हैं कि भारतीय व्यवसाय अपनी विलक्षणता, गतिशीलता (गत्यात्मकता) व गुणात्मकता में इन सबसे कहीं आगे था।

शुरू के दिनों में भारतीय अर्थव्यवस्था पूर्णत: कृषि आधारित थी। लोग अपने उपभोग की वस्तुओं का उत्पादन स्वयं करते थे। वस्तुओं को बेचने अथवा विनिमय की आवश्यकता ही नहीं थी। लेकिन विकास के साथ-साथ लोगों की आवश्यकताएँ बढ़ने लगी। जिसके कारण वस्तुओं के उत्पादन में भी वृद्धि होने लगी। लोगों ने दैनिक उपयोग तथा विलासिता संबंधी विभिन्न वस्तुओं के उत्पादन में विशेषज्ञता अर्जित करनी शुरू कर दी और इस तरह से उनके पास अपने उपयोग की अन्य वस्तुओं के उत्पादन के लिए दक्षता और समय का

अभाव होना शुरू हो गया। इस प्रकार इनकी कुशलता में वृद्धि होने लगी और ये अपनी आवश्यकता से अधिक वस्तुओं का उत्पादन करने में सक्षम हो गए। अत: अपनी अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अपनी अधिक उत्पादित वस्तुओं के विनिमय की प्रणाली विकसित हो गई। यह व्यापार की शुरूआत थी।

आज ज्यादातर लोग यह मानते हैं कि भारत में व्यवसाय व व्यापार के क्षेत्र में इतना विकास स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात ही हुआ है। भारत, आज औद्योगिक उत्पादन में इतना सक्षम हो गया है कि हम सभी वस्तुओं का उत्पादन देशी तकनीक के प्रयोग से कर सकते हैं। लेकिन इससे यह परिणाम नहीं निकाल लेना चाहिए कि भूत काल में भारतीय सभ्यता विकसित या उन्नत नहीं थी। जबकि हमें आज भी भारत की समृद्ध व्यापारिक व वाणिज्यिक धरोहर पर गर्व है।

आप यह जानकर हैरान होंगे कि भारत ने व्यापार व वाणिज्य के क्षेत्र में अपनी यात्रा 5000 वर्ष ई.पू. शुरू कर दी थी। कई ऐतिहासिक साक्ष्यों से यह प्रमाणित होता है कि उस समय भारत में सुनियोजित शहर थे। भारतीय कपड़ों, आभूषणों और इत्र इत्यादि के प्रति पूरे विश्व में आकर्षण था। यह भी प्रमाण मिले हैं कि काफी समय से भारतीय व्यापारियों में व्यवसाय के लिए मुद्रा के प्रयोग का चलन था। व्यापारियों, शिल्पकारों व उत्पादकों के हितों की रक्षा के लिए संघों (guild) का प्रचलन था। यह भारत में व्यापार व वाणिज्य के जटिल विकास की ओर संकेत करता है। उस समय भारत के व्यापारियों ने न केवल सुदृढ़ आंतरिक व्यवसायिक रास्तों का जाल बुना था, बल्कि उनके व्यावसायिक संबंध अरब, मध्य व दक्षिण पूर्व एशिया के व्यापारियों से भी थे।

भारत विभिन्न प्रकार की धातु सामग्री के उत्पादन में भी सक्रिय था, जैसे तांबा, पीतल की वस्तुएं, बर्तन, गहने तथा सजावटी सामान आदि। भारतीय व्यापारी विश्व के विभिन्न भागों में अपने उत्पादों का निर्यात करते थे और वहां से उनके उत्पादों का आयात करते थे। यह एक सर्वविदित तथ्य है कि अंग्रेज सर्वप्रथम भारत में व्यापार करने के लिए ही आए थे, जिन्होंने बाद में यहां अपना राज्य स्थापित कर लिया।

भारत ने कई प्रकार से विश्व व्यापार व वाणिज्य में योगदान दिया है। गणना के लिए अंक प्रणाली, जिसका हम आज भी उपयोग करते हैं, भारत में पहले से विकसित थी। संयुक्त परिवार प्रथा तथा व्यवसाय में श्रम विभाजन का विकास भी यहीं हुआ, जो आज तक प्रचलित है। आज आधुनिक समय में प्रयोग की जाने वाली उपभोक्ता केंद्रित व्यवसाय तकनीक पुराने समय से भारतीय व्यवसाय का एक अभिन्न अंग रही है।

इसलिए हम कह सकते हैं कि भारत की अपनी समृद्ध व्यावसायिक धरोहर है, जिसने इसकी उन्नति में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

पाठगत प्रश्न 1.3

I. राहुल एक दुकानदार है और वह निम्नलिखित क्रियाओं में संलग्न है, जिन्हें वह व्यवसाय कहता है। नीचे दिए गए कथनों को जांचिए और बताइए कि

टिप्पणी

आप किनसे सहमत और किनसे असहमत हैं। हर कथन के आगे 'सहमत' अथवा 'असहमत' लिखिए।

i. राहुल ने ग्राहक को अपनी दुकान से ब्रेड बेची।
ii. उसने अपनी छोटी बहन को उपहार देने के लिए एक पेन खरीदा।
iii. उसने अपने पड़ोसी को अपना पुराना टेलीविजन ₹ 3000 में बेचा।
iv. राहुल ने ग्राहकों को बेचने के लिए मुर्गी पालन केंद्र से अंडे खरीदे।
v. राहुल ने ₹ 10 मूल्य वाला दूध का पैकेट ग्राहक को ₹ 12 में बेचा।
vi. राहुल अपने घर के लिए ₹ 30 की सब्जी ले आया।
vii. उसने अपनी दुकान से बच्चों को मुफ्त बिस्किट बाँटे।

II. नीचे व्यवसाय से सम्बन्धित कुछ क्रियाएँ दी गई हैं। इनमें से कुछ क्रियाएं सही हैं और कुछ गलत। सही क्रियाओं के आगे सही लिखिए और गलत क्रियाओं के आगे गलत लिखिए :

i. व्यवसाय में केवल वस्तुओं अथवा सेवाओं का लेन-देन किया जाता है। राष्ट्रीय एकता में इसकी कोई भूमिका नहीं होती।
ii. व्यवसाय लोगों के जीवन स्तर में कोई सुधार नहीं लाता।
iii. औद्योगिक शोधों से नए उत्पादों का विकास संभव हो पाता है।
iv. व्यवसाय, विदेशों से वस्तुएं आयात करने की स्वीकृति नहीं देता।
v. व्यवसाय, रोजगार के अवसर प्रदान कर गरीबी कम करने में मदद करता है।
vi. यह अंतराष्ट्रीय मेंलों तथा प्रदर्शनियों में हमारे उत्पादों के विक्रय अथवा प्रदर्शन से देश की छवि सुधरता है।

1.6 व्यवसाय के उद्देश्यों का वर्गीकरण

सभी व्यावसायिक क्रियाएँ कुछ उद्देश्यों की पूर्ति के लिए की जाती हैं। व्यवसाय के उद्देश्यों को निम्न प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है :

1.6.1 आर्थिक उद्देश्य

व्यवसाय के आर्थिक उद्देश्यों के अंतर्गत लाभ कमाने के उद्देश्य के साथ वे समस्त आवश्यक क्रियाएँ भी आती हैं, जिनके द्वारा लाभ कमाने के उद्देश्य की पूर्ति की जाती है, जैसे ग्राहक बनाना, नियमित नव प्रवर्तन तथा उपलब्ध संसाधनों का बेहतर उपयोग आदि।

लाभ कमाना

लाभ, व्यवसाय के लिए जीवन दायिनी शक्ति का कार्य करता है। इसके बिना कोई भी व्यवसाय प्रतियोगिता के बाजार में टिका नहीं रह सकता। वास्तव में किसी भी व्यावसायिक इकाई के अस्तित्व में आने का उद्देश्य होता है- लाभ कमाना। लाभ, व्यवसायी को न केवल उसकी आजीविका अर्जित करने में सहायता करता है, अपितु लाभ का एक भाग व्यवसाय में पुन: विनियोजित कर व्यावसायिक गतिविधियों के विस्तार में भी सहायक होता है।

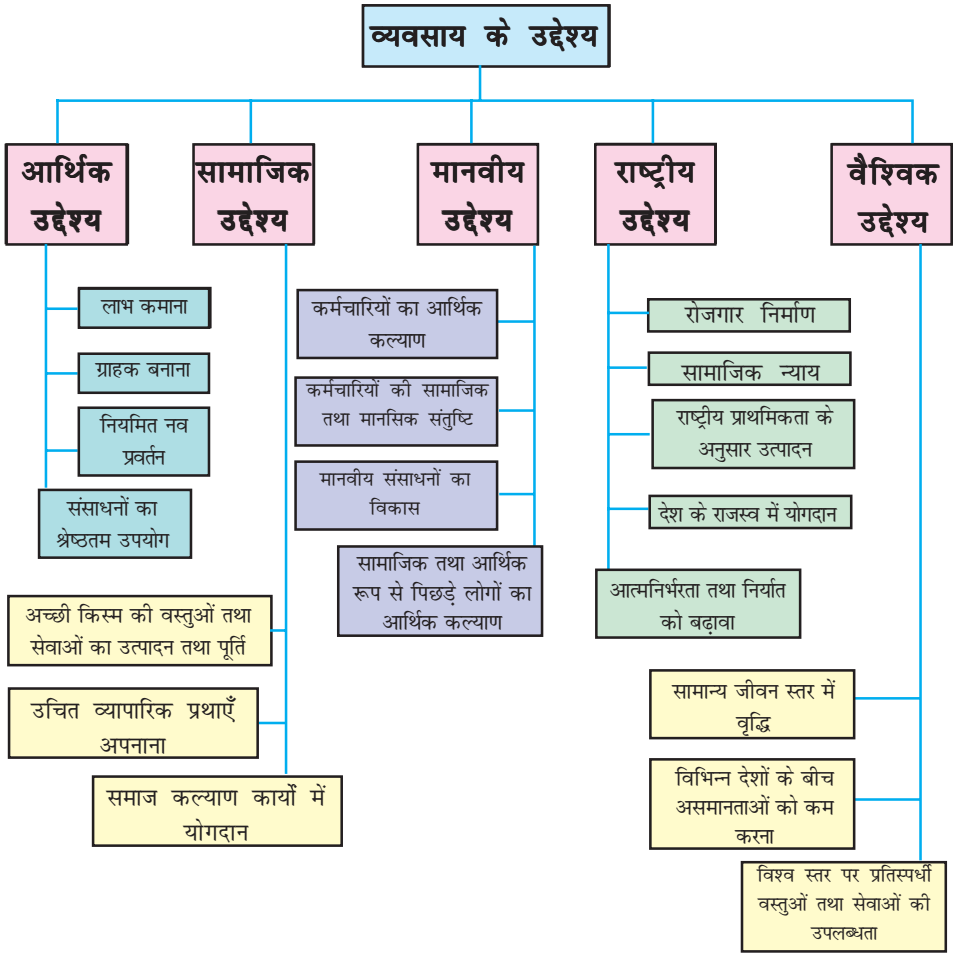

लाभ कमाने के प्राथमिक उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए व्यवसाय के कुछ अन्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं :

i) **ग्राहक बनाना :** जब तक उत्पाद को और सेवाओं को खरीदने वाले ग्राहक न हों, तब तक किसी भी व्यवसाय का अस्तित्व में बने रहना संभव नहीं है। कोई भी व्यवसायी तभी लाभ अर्जित कर सकता है जबकि वह लाभ के बदले में अपने ग्राहकों को अच्छी गुणवत्ता की वस्तुएँ और सेवाएँ उपलब्ध कराए। इसके लिए यह आवश्यक है वह अपनी विद्यमान वस्तुओं के लिए ग्राहकों को आकर्षित करे तथा अधिक से अधिक ग्राहक बनाए और नए-नए उत्पाद बाजार में लाए। विभिन्न विपणन क्रियाओं के द्वारा इसे प्राप्त किया जा सकता है।

ii) **नियमित नव-प्रवर्तन :** व्यवसाय अत्यंत गतिशील है तथा एक उपक्रम अपने वातावरण में हुए परिवर्तनों को अपनाकर ही निरंतर सफल हो सकता है। नव प्रवर्तन का अर्थ है- नया परिवर्तन। ऐसा परिवर्तन, जिससे उत्पाद की गुणात्मकता, प्रक्रिया और वितरण में संशोधन हो। कीमतों में कमी और बिक्री में वृद्धि से व्यवसायी को अधिक लाभ प्राप्त होता है। हथकरघों के स्थान पर पावरलूम और कृषि में हल अथवा हाथ से चलने वाले यंत्रों के स्थान पर ट्रैक्टर का उपयोग आदि नव-प्रवर्तन के ही परिणाम हैं।

टिप्पणी

iii) **संसाधानों का श्रेष्ठतम उपयोग :** आप जानते हैं कि किसी भी व्यवसाय को चलाने के लिए पर्याप्त पूँजी अथवा कोष की आवश्यकता होती है। इस पूँजी को मशीनें खरीदने, कच्चा माल तथा कर्मचारियों को काम पर रखने और प्रतिदिन के खर्चों की पूर्ति के लिए प्रयोग में लाया जाता है। इस प्रकार व्यावसायिक क्रियाओं में विभिन्न संसाधनों जैसे मशीनें, आदमी, माल, मुद्रा आदि की आवश्यकता होती है। कुशल कर्मचारियों की नियुक्ति द्वारा, मशीनों का क्षमता पूर्ण उपयोग करके तथा कच्चे माल के अपव्यय को कम करके इन उद्देश्यों की प्राप्ति की जा सकती है।

पाठगत प्रश्न 1.4

नीचे व्यवसाय के आर्थिक उद्देश्यों से संबंधित कुछ कथन दिए गए हैं। उनमें कुछ सत्य हैं और कुछ असत्य। सत्य और असत्य कथनों को छाँटिए।

i. माल की माँग को बढ़ाना व्यवसाय का प्राथमिक उद्देश्य होता है।

ii. व्यवसायी, व्यवसाय में विनियोजित पूंजी के अनुपात में लाभ अर्जित करना चाहता है।

iii. व्यवसायी के लिए हमेशा यह संभव नहीं होता कि वह सामग्री का श्रेष्ठतम उपयोग करे।

iv. व्यवसायी, व्यवसाय से अर्जित लाभ का प्रयोग केवल अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए करता है।

v. रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना व्यवसाय का प्राथमिक आर्थिक उद्देश्य होता है।

1.6.2 सामाजिक उद्देश्य

सामाजिक उद्देश्य व्यवसाय के वे उद्देश्य होते हैं, जिन्हें समाज के हितों के लिए प्राप्त करना आवश्यक होता है। अत: हर व्यवसाय का उद्देश्य होना चाहिए कि वह किसी भी प्रकार से समाज को हानि न पहुँचाए। व्यवसाय के सामाजिक उद्देश्यों के अंतर्गत अच्छी गुणवत्ता वाली वस्तुओं तथा सेवाओं का उत्पादन तथा पूर्ति, उचित व्यापारिक प्रथाएँ अपनाना, समाज के सामान्य कल्याणकारी कार्यों में योगदान तथा कल्याणकारी सुविधाओं में योगदान करना सम्मिलित है।

i) **अच्छी गुणवत्ता वाली वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन तथा पूर्ति :** चूंकि व्यवसाय समाज के विविध संसाधनों का उपयोग करता है। इसलिए समाज की अपेक्षा होती है कि व्यवसाय उसे गुणवत्ता वाली वस्तुओं तथा सेवाओं की आपूर्ति करे। इसलिए व्यवसाय का उद्देश्य होना चाहिए कि वह अच्छी गुणवत्ता वाली वस्तुओं तथा सेवाओं का उत्पादन करे तथा उचित कीमत पर और उचित समय पर उनकी पूर्ति करें। व्यवसायी द्वारा समाज को आपूर्ति की जाने वाली वस्तुओं तथा सेवाओं की गुणवत्ता के अनुसार उनका मूल्य वसूल करना चाहिए।

ii) **उचित व्यापारिक प्रथाएँ अपनाना :** प्रत्येक समाज में जमाखोरी कालाबजारी, अधिक कीमत वसूलना आदि क्रियाएँ अवांछित मानी जाती हैं। इसके अलावा गुमराह करने वाले विज्ञापन, वस्तुओं की गुणवत्ता के बारे में गलत छाप छोड़ते हैं।

व्यावसायिक इकाइयों को अधिक लाभ कमाने के लिए आवश्यक वस्तुओं की कृत्रिम कमी अथवा कीमतों में वृद्धि नहीं करनी चाहिए। ऐसी क्रियाओं से व्यवसायी की बदनामी होती है और कभी-कभी उसे दंड अथवा कानूनन जेल की सजा भी भुगतनी पड़ती है। इस प्रकार उपभोक्ता और समाज के कल्याण को ध्यान में रखते हुए, व्यवसायी को उद्देश्य तथा उचित व्यापारिक प्रथाओं को अपनाना चाहिए।

iii) **समाज के सामान्य कल्याण कार्यों में योगदान :** व्यावसायिक इकायों को समाज के सामान्य कल्याण तथा उत्थान के लिए कार्य करना चाहिए। यह अच्छी शिक्षा के लिए स्कूल तथा कॉलेज बनाकर, लोगों को आजीविका कमाने के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्र खोलकर, चिकित्सा की सुविधा के लिए अस्पतालों की स्थापना कर, आम जनता के मनोरंजन के लिए पार्क तथा खेल परिसरों आदि की सुविधाएँ प्रदान करके संभव है।

पाठगत प्रश्न 1.5

व्यवसाय के सामाजिक उद्देश्यों के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन से कथन सही और कौन से गलत हैं।

i. व्यवसाय के सामाजिक उद्देश्य इस सिद्धांत पर आधारित हैं कि जो व्यवसाय के लिए अच्छा है वही समाज के लिए भी अच्छा है।

ii. उपभोक्ता के लिए अच्छी गुणवत्ता वाली वस्तुओं का उत्पादन तथा आपूर्ति व्यवसाय का सामाजिक उद्देश्य है।

iii. उत्पाद की माँग को बढ़ाना व्यवसाय का सामाजिक उद्देश्य है।

iv. जनता के लिए खेल परिसर का निर्माण व्यवसाय का आर्थिक उद्देश्य है।

v. जमाखोरी और कालाबाजारी व्यवसाय के एक हिस्से के रूप में उचित समझे जाते हैं।

1.6.3 मानवीय उद्देश्य

मानवीय उद्देश्यों से अभिप्राय उन उद्देश्यों से है, जिनमें समाज के अक्षम तथा विकलांग, शिक्षा अथवा प्रशिक्षण से वंचित लोगों के कल्याण तथा कर्मचारियों की अपेक्षाओं की पूर्ति के लक्ष्य निहित होते हैं। इस प्रकार व्यवसाय के मानवीय उद्देश्यों के अंतर्गत कर्मचारियों की आर्थिक सुरक्षा, सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक संतुष्टि और मानव संसाधनों का विकास निहित है।

i) **कर्मचारियों का आर्थिक कल्याण :** व्यवसाय में कर्मचारियों को उचित वेतन, कार्य-निष्पादन के लिए अभिप्रेरणाएं, भविष्यनिधि (प्रोविडेंट फंड) के लाभ, पैंशन तथा अन्य अनुलाभ जैसे चिकित्सा सुविधा, आवासीय सुविधा आदि उपलब्ध कराए जाने चाहिए। इससे कार्य क्षेत्र में व्यक्ति अधिक संतुष्टि का अनुभव करेंगे और व्यवसाय के लिए अधिक योगदान दे सकेंगे।

ii) **कर्मचारियों की सामाजिक तथा मानसिक संतुष्टि :** यह हर व्यावसायिक इकाई का कर्तव्य बनता है कि वह अपने कर्मचारियों को सामाजिक तथा मानसिक संतुष्टि प्रदान करें और ऐसा वे उनके काम को रोचक और चुनौतीपूर्ण बनाकर, सही कार्य के लिए सही व्यक्ति को नियुक्त कर तथा कार्य की नीरसता को समाप्त करके संभव बना सकते हैं। साथ ही निर्णय लेते समय कर्मचारियों की शिकायतों तथा उनके सुझावों पर गंभीरतापूर्वक विचार किया जाना चाहिए। यदि कर्मचारी खुश और संतुष्ट हैं तो वे अपने कार्य भी अच्छे ढंग से कर सकेंगे।

iii) **मानवीय संसाधानों का विकास :** कर्मचारी मनुष्य हैं और इसलिए सदैव अपने पेशागत वृद्धि के लिए तत्पर रहते हैं। इसके लिए उपयुक्त प्रशिक्षण तथा विकास की आवश्यकता होती है। व्यवसाय तभी उन्नति की ओर अग्रसर हो सकता है जब समय के अनुसार उसके कर्मचारी अपनी क्षमताओं, कार्य-कुशलताओं तथा दक्षताओं में सुधार करते रहें। अत: व्यवसाय के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वह अपने कर्मचारियों के लिए प्रशिक्षण तथा विकास के कार्यक्रम आयोजित करते रहें।

iv) **सामाजिक तथा आर्थिक रूप से पिछड़े लोगों का आर्थिक कल्याण :** व्यावसायिक इकाइयाँ समाज के पिछड़े तथा शारीरिक और मानसिक रूप से विकलांग लोगों की मदद करके समाज के लिए एक प्रेरणा स्रोत बन सकती हैं। ऐसा वे विभिन्न प्रकार से कर सकती हैं। उदाहरण के लिए व्यवसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करके समाज के पिछड़े समुदाय के लोगों की आय अर्जन क्षमता बढ़ाई जा सकती है। इसके अलावा व्यवसायिक इकाइयाँ मेधावी विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के लिए छात्रवृत्ति प्रदान करके भी ऐसा कर सकती है।

पाठगत प्रश्न 1.6

मानवीय उद्देश्यों से संबंधित निम्नलिखित कथनों में से सही और गलत कथन छांटिए:

i. व्यवसायी को अपने कर्मचारियों को उचित वेतन देना चाहिए, जो कर्मचारियों को कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करेगा।

ii. व्यावसायिक इकाइयों को अपने कर्मचारियों को सामाजिक तथा मानसिक संतुष्टि प्रदान करनी चाहिए।

iii. जब तक कि कोई विकलांग व्यक्ति व्यवसाय का कर्मचारी न हो, व्यवसायी को उसकी मदद नहीं करनी चाहिए।

iv. व्यावसायिक इकाइयों को महत्वपूर्ण निर्णय लेते समय, कर्मचारियों द्वारा दिए गए सुझावों पर ध्यान नहीं देना चाहिए।

v. समाज के किसी शारीरिक रूप से विकलांग व्यक्ति की सहायता करना व्यवसाय के आर्थिक उद्देश्यों के अंतर्गत आता है।

1.6.4 राष्ट्रीय उद्देश्य

व्यवसाय, देश का एक महत्वपूर्ण अंग होता है अत: राष्ट्रीय लक्ष्यों और आकांक्षाओं की प्राप्ति प्रत्येक व्यवसाय का उद्देश्य होना चाहिए। व्यवसाय के राष्ट्रीय उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

i) रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना

व्यवसाय के महत्वपूर्ण राष्ट्रीय लक्ष्य है, लोगों को लाभपूर्ण रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना। इस लक्ष्य की पूर्ति नई व्यावसायिक इकाईयाँ स्थापित करके, बाजार का विस्तार करके तथा वितरण प्रणाली को और अधिक व्यापक बनाकर की जा सकती है।

ii) सामाजिक न्याय को बढ़ावा देना

एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में एक व्यवसायी से यह आशा की जाती है कि जिन लोगों के साथ वह लेनदेन करता है उन सभी को समान अवसर प्रदान करे। यह भी आशा की जाती है कि वह सभी कर्मचारियों को कार्य करने तथा उन्नति करने के समान अवसर उपलब्ध कराए। इस उद्देश्य के अंतर्गत वह समाज के पिछड़े तथा कमजोर वर्गो के लोगों पर विशेष ध्यान दें।

iii) राष्ट्रीय प्राथमिकता के अनुसार उत्पादन करना

व्यावसायिक इकाइयों को सरकार की नीतियों तथा योजनाओं की प्राथमिकता को देखते हुए उन्हीं के अनुसार वस्तुओं का उत्पादन तथा आपूर्ति करनी चाहिए। हमारे देश में व्यवसाय के राष्ट्रीय उद्देश्यों में से एक उद्देश्य आवश्यक वस्तुओं के उत्पादन को बढ़ाकर उचित दर पर उपलब्ध कराना होना चाहिए।

iv) देश के राजस्व में योगदान

व्यवसाय के स्वामियों को करों और बकाया राशि का भुगतान ईमानदारी के साथ करना चाहिए। इससे सरकार का राजस्व बढ़ता है, जिसका उपयोग राष्ट्र के विकास के लिए किया जा सकता है।

v) आत्मनिर्भरता तथा निर्यात को बढ़ावा

देश को आत्मनिर्भर बनने में सहायता करने के लिए व्यावसायिक इकाइयों की एक अतिरिक्त जिम्मेदारी है कि वे वस्तुओं के आयात को रोकें। इसके अतिरिक्त प्रत्येक व्यावसायिक इकाई को निर्यात बढ़ाने तथा अधिक से अधिक विदेशी मुद्रा देश के कोष में लाने को अपना लक्ष्य बनाना चाहिए।

पाठगत प्रश्न 1.7

उचित शब्दों का चुनाव कर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

i. आवश्यक वस्तुओं का उत्पादन तथा उचित कीमत पर उनकी आपूर्ति, व्यवसाय के _____ उद्देश्यों के अंतर्गत आता है। (सामाजिक, राष्ट्रीय, मानवीय)

टिप्पणी

ii. देश को आत्म निर्भर बनाने के लिए व्यावसायिक इकाइयों का लक्ष्य _____ को बढ़ाना होना चाहिए। (निर्यात, आयात, कीमत)

iii. व्यावसायिक इकाइयों को ईमानदारी के साथ _____ रूप से अपने कर चुकाने चाहिएँ। (कभी-कभी, प्राय:, नियमित)

iv. व्यवसाय को अपने सभी _____ को उन्नति करने के समान अवसर उपलब्ध कराने चाहिएँ। (स्वामियों, कर्मचारियों, पूर्तिकर्त्ताओं)

1.6.5 वैश्विक उद्देश्य

पहले भारत के अन्य देशों के साथ बहुत ही सीमित व्यापारिक संबंध थे। तब वस्तुओं की आयात और निर्यात संबंधी नीतियाँ बहुत कठोर थीं, लेकिन आजकल उदारवादी आर्थिक नीतियों के कारण काफी हद तक विदेशी निवेश पर प्रतिबंध समाप्त हो चुका है, तथा आयातित वस्तुओं पर लगने वाला शुल्क भी काफी कम हो गया है। इन परिवर्तनों से बाजार में प्रतियोगिता काफी बढ़ गई है। आज वैश्वीकरण के कारण पूरी दुनिया एक बड़े बाजार के रूप में परिवर्तित हो चुकी है। आज एक देश में तैयार माल दूसरे देश में आसानी से उपलब्ध है। इस प्रकार विश्व बाजार में प्रतिस्पर्धा बढ़ने से प्रत्येक व्यवसाय अपने मस्तिष्क में कुछ उद्देश्य रखकर काम करने लगा है, जिसे वैश्विक उद्देश्य कहा जा सकता है। आइए उन उद्देश्यों का अध्ययन करें।

i) **सामान्य जीवन स्तर में वृद्धि :** व्यावसायिक गतिविधियों के विकास के कारण अब दुनिया भर में उचित मूल्य पर अच्छी गुणवत्ता वाली वस्तुएँ आसानी से उपलब्ध हैं। इस प्रकार एक देश का व्यक्ति दूसरे देश के व्यक्ति द्वारा उपयोग किए जा रहे उसी प्रकार के सामान का उपयोग कर सकता है। इससे लोगों के सामान्य जीवन स्तर में वृद्धि होती है।

ii) **विभिन्न देशों के बीच असमानताओं को कम करना :** व्यवसाय को अपनी गतिविधियों का विस्तार कर अमीर और गरीब राष्ट्रों के बीच की असमानता को कम करना चाहिए। विकासशील तथा अविकसित देशों में पूँजी विनियोजित करके ये औद्योगिक तथा आर्थिक वृद्धि को प्रोत्साहित कर सकते हैं।

iii) **विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धा वस्तुओं तथा सेवाओं की उपलब्धता :** व्यवसाय को उन वस्तुओं तथा सेवाओं के उत्पादन में वृद्धि करनी चाहिए, जिनकी विश्व बाजार में माँग तथा प्रतिस्पर्धा अधिक है। इससे निर्यातक देश की छवि में सुधार आता है और देश को अधिक विदेशी मुद्रा की प्राप्ति होती है।

1.7 व्यवसाय के सामाजिक उत्तरदायित्व

हम सभी जानते हैं कि लोग लाभ अर्जित करने के उद्देश्य से व्यवसाय चलाते हैं। लेकिन केवल लाभ अर्जित करना ही व्यवसाय का एकमात्र उद्देश्य नहीं होता। समाज का एक अंग होने के नाते इसे बहुत से सामाजिक कार्य भी करने होते हैं। यह विशेष रूप से अपने अस्तित्व की सुरक्षा में संलग्न स्वामियों, निवेशकों, कर्मचारियों तथा सामान्य रूप से समाज

व समुदाय की देखरेख की जिम्मेदारी भी निभाता है। अत: प्रत्येक व्यवसाय को किसी न किसी रूप में इनके प्रति जिम्मेदारियों का निर्वाह करना चाहिए। उदाहरण के लिए, निवेशकों को उचित प्रतिफल की दर का आश्वासन देना, अपने कर्मचारियों को अच्छा वेतन, सुरक्षा, उचित कार्य दशाएँ उपलब्ध कराना, अपने ग्राहकों को अच्छी गुणवत्ता वाली वस्तुएँ उचित मूल्यों पर उलब्ध कराना, पर्यावरण की सुरक्षा करना तथा इसी प्रकार के अन्य बहुत से कार्य करने चाहिएँ।

हालांकि ऐसे कार्य करते समय व्यवसाय के सामाजिक उत्तारदायित्वों के निर्वाह के लिए दो बातों का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए। पहली तो यह कि ऐसी प्रत्येक क्रिया धर्मार्थ क्रिया नहीं होती। इसका अर्थ यह है कि यदि कोई व्यवसाय किसी अस्पताल अथवा मंदिर या किसी स्कूल अथवा कॉलेज को कुछ धनराशि दान में देता है तो यह उसका सामाजिक उत्तरदायित्व नहीं कहलाएगा, क्योंकि दान देने से सामाजिक उत्तरदायित्वों का निर्वाह नहीं होता। दूसरी बात यह है कि, इस तरह की क्रियाएँ कुछ लोगों के लिए अच्छी और कुछ लोगों के लिए बुरी नहीं होनी चाहिए। मान लीजिए एक व्यापारी तस्करी करके या अपने ग्राहकों को धोखा देकर बहुत सा धन अर्जित कर लेता है और गरीबों के मुफ्त इलाज के लिए अस्पताल चलाता है तो उसका यह कार्य सामाजिक रूप से न्यायोचित नहीं है। सामाजिक उत्तरदायित्व का अर्थ है कि एक व्यवसायी सामाजिक क्रियाओं को सम्पन्न करते समय ऐसा कुछ भी न करे, जो समाज के लिए हानिकारक हो।

इस प्रकार सामाजिक उत्तरदायित्व की अवधारणा व्यवसायी को जमाखोरी व कालाबाजारी, कर चोरी, मिलावट, ग्राहकों को धोखा देना जैसी अनुचित व्यापरिक क्रियाओं के बदले व्यवसायी को विवेकपूर्ण प्रबंधन के द्वारा लाभ अर्जित करने के लिए प्रोत्साहित करती है। यह कर्मचारियों को उचित कार्य तथा आवासीय सुविधाएँ प्रदान करके, ग्राहकों को उत्पाद विक्रय उपरांत उचित सेवाएँ प्रदान करके, पर्यावरण प्रदूषण को नियंत्रित करके तथा प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा द्वारा संभव है।

पाठगत प्रश्न 1.8

उचित शब्द चुनकर खाली स्थानों को भरिए :

i. प्रत्येक व्यवसाय एक _____ के भीतर संचालित होता है।

ii. व्यवसाय के सामाजिक उत्तरदायित्वों का अर्थ है वे सभी दायित्व तथा _____ जिनका समाज कल्याण से सीधा संबंध होता है।

iii. उपभोक्ताओं को ऊंची कीमत पर _____ वस्तुओं की आपूर्ति कर अपने निवेशकों को अच्छा प्रतिफल देना सामाजिक उत्तरदायित्वों की पूर्ति नहीं है।

iv. सरकारी अधिनियम से बचने के लिए व्यवसायिक संगठनों को अपने दायित्वों का निर्वाह _____ रूप से करना चाहिए।

v. व्यवसाय के लाभ अर्जित करने की क्षमता इसकी _____ पर निर्भर करती है।

टिप्पणी

vi. आज _____ के कारण संपूर्ण विश्व एक बड़ा बाजार बन गया है।

vii. _____ के अंतर्गत यह गर्भित है कि एक व्यवसायी को अपनी व्यावसायिक क्रियाओं में ऐसा कुछ नहीं करना चाहिए जो समाज के लिए हानिकारक हो।

viii. सामाजिक उत्तरदायित्व की संकल्पना व्यवसायी को लाभार्जन हेतु अनुचित व्यवहार जैसे कालाबाजारी, संग्रहण, मिलावट, कर चोरी तथा ग्राहकों से धोखेबाजी को _____ करती है।

1.8 विभिन्न हित समूहों के प्रति उत्तरदायित्व

व्यवसाय के सामाजिक उत्तरदायित्व की अवधारणा तथा इसके महत्व के बारे में जानकारी प्राप्त कर लेने के बाद आइए जानें कि व्यवसाय का इसके विभिन्न हित-समूहों, जिन पर यह आश्रित है, के प्रति क्या उत्तरदायित्व हैं। व्यवसाय प्राय: स्वामियों, विनिवेशकों, कर्मचारियों, पूर्तिकर्ताओं, ग्राहकों तथा उपभोक्ताओं, प्रतियोगियों, सरकार तथा समाज पर आश्रित है। इन्हें हित-समूह इसलिए कहा जाता है, क्योंकि व्यवसाय की प्रत्येक क्रिया से इन समूहों का हित, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होता है।

i) **स्वामियों तथा निवेशकों के प्रति उत्तरदायित्व :** व्यवसाय के अपने स्वामियों के प्रति उत्तरदायित्व हैं :

i. व्यवसाय को प्रभावी ढंग से चलाना;
ii. पूँजी तथा अन्य संसाधनों का उचित प्रयोग करना;
iii. पूँजी की वृद्धि एवं मूल्य वृद्धि करना;
iv. विनिवेशित पूँजी पर नियमित तथा उचित प्रतिफल सुनिश्चित करना;
v. उनके निवेश की सुरक्षा का आश्वासन देना;
vi. ब्याज का नियमित भुगतान करना;
vii. मूलधन की, समय पर वापसी करना।

ii) **लेनदारों के प्रति उत्तरदायित्व :** व्यवसाय के अपने लेनदारों के प्रति उत्तरदायित्व है:

i. समय पर भुगतान करना;
ii. उनके द्वारा दिए गए उधार की सुरक्षा सुनिश्चित करना;
iii. अन्य व्यवसायों की भाँति व्यवसाय के मानकों का पालन करना।

iii) **कर्मचारियों के प्रति उत्तरदायित्व :** व्यवसाय के अपने कर्मचारियों के प्रति निम्नलिखित उत्तरदायित्व हैं :

i. वेतन अथवा मजदूरी का नियमित तथा समय पर भुगतान;
ii. उचित कार्य दशाएँ तथा कल्याणकारी सुविधाएँ;
iii. भावी जीविका का श्रेष्ठ अवसर;
iv. नौकरी की सुरक्षा, सामाजिक सुरक्षा जैसे भविष्य निधि की सुविधाएँ, सामूहिक बीमा, पेंशन, अवकाश प्राप्ति के बाद की सुविधाएँ, मुआवजा आदि;
v. श्रेष्ठ रहन-सहन जैसे- गृह, यातयात, जलपान गृह, शिक्षु संरक्षण गृह उपलब्ध कराना।

vi. समयानुसार प्रशिक्षण तथा विकास।

iv) **आपूर्तिकर्ताओं के प्रति उत्तरदायित्व :** व्यवसाय के अपने आपूर्तिकर्त्ताओं के प्रति उत्तरदायित्व निम्नलिखित हैं :

i. वस्तुओं के क्रय के लिए नियमित आदेश देना;
ii. उचित नियमों तथा शर्तों के आधार पर लेन-देन करना;
iii. उचित उधार अवधि का लाभ उठाना;
iv. बकाया राशि का समय पर भुगतान करना।

v) **ग्राहकों के प्रति उत्तरदायित्व :** ग्राहकों के प्रति व्यवसाय के उत्तरदायित्व निम्नलिखित हैं :

i. वस्तुओं तथा सेवाएं ऐसी होनी चाहिएँ कि उपभोक्ताओं की आवश्यकताओं को ध्यान में रख सकें;
ii. वस्तुओं तथा सेवाओं की गुणवत्ता श्रेष्ठ होनी चाहिए;
iii. वस्तुओं तथा सेवाओं की आपूर्ति में नियमितता होनी चाहिए;
iv. वस्तुओं तथा सेवाओं के मूल्य उचित तथा सामर्थ्य क्षमता के अनुकूल होने चाहिएँ;
v. वस्तुओं के हर गुण तथा दोष तथा उनके उपभोग के बारे में उपभोक्ता को उचित सूचना दी जानी चाहिए;
vi. विक्रय-उपरांत उचित सेवाएँ होनी चाहिए;
vii. यदि उपभोक्ताओं की कोई शिकायत है, तो उसे तुरंत दूर किया जाना चाहिए;
viii. व्यवसाय को कम वजन, मिलावट आदि अनुचित व्यापारिक प्रथाओं से बचना चाहिए।

vi) **प्रतियोगियों के प्रति उत्तरदायित्व :** व्यवसाय के अपने प्रतियोगियों के प्रति निम्नलिखित उत्तरदायित्व हैं :

i. अत्यधिक विक्रय कमीशन का प्रस्ताव न दें;
ii. प्रत्येक बिक्री पर ऊँची छूट दर या प्रत्येक वस्तु के साथ मुफ्त वस्तुएँ न दें;
iii. झूठे और अभद्र विज्ञापन के द्वारा अपने प्रतियोगियों को बदनाम करने की कोशिश न करें।

vii) **सरकार के प्रति उत्तरदायित्व :** सरकार के प्रति व्यवसाय के विभिन्न उत्तरदायित्व निम्नलिखित हैं :

i. सरकार के निर्देशों के अनुसार ही व्यावसायिक इकाइयों की स्थापना करना;
ii. फीस, कर, अधिभार आदि का नियमित तथा ईमानदारी के साथ भुगतान करना;
iii. प्रतिबंधित तथा एकाधिकारी व्यावसायिक गतिविधियों में संलग्न न होना;
iv. सरकार द्वारा स्थापित प्रदूषण नियंत्रण मान दंडों का पालन करना;
v. रिश्वत तथा गैर कानूनी क्रियाओं द्वारा भ्रष्टाचार में लिप्त न होना।

viii) **समाज के प्रति उत्तरदायित्व :** एक समाज, व्यक्तियों, समूहों, संगठनों, परिवारों आदि से मिलकर बनता है। ये सभी समाज के सदस्य होते हैं। ये सभी एक दूसरे के साथ मिलते-जुलते हैं तथा अपनी लगभग सभी गतिविधियों के लिए एक दूसरे पर निर्भर होते हैं। इन सभी के बीच एक संबंध होता है, चाहे वह प्रत्यक्ष हो या अप्रत्यक्ष। समाज का एक अंग होने के नाते, समाज के सदस्यों के बीच संबंध बनाए रखने में व्यवसाय को भी मदद करनी चाहिए। इसके लिए उसे समाज के प्रति कुछ निश्चित उत्तरदायित्वों का निर्वाह करना आवश्यक है। ये उत्तरदायित्व निम्नलिखित हैं :

i. समाज के पिछड़े तथा कमजोर वर्गों की सहायता करना;
ii. सामाजिक तथा सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा करना;
iii. रोजगार के अवसर जुटाना;
iv. पर्यावरण की सुरक्षा करना;
v. प्राकृतिक संसाधनों तथा वन्य जीवन का संरक्षण करना;
vi. खेलों तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों को बढ़ावा देना;
vii. शिक्षा, चिकित्सा, विज्ञान प्रोद्यौगिकी आदि के क्षेत्रों में सहायक तथा विकासात्मक शोधों को बढ़ावा देने में सहायता करना।

पाठगत प्रश्न 1.9

उपर्युक्त आधार पर व्यवसाय के कुछ उत्तरदायित्व नीचे दिए गए हैं। बताइए कि प्रत्येक दायित्व किस विशेष समूह से संबंधित है।

i. पर्यावरण की सुरक्षा।
ii. बेहतर जीवन संबंधी सुविधाएं जैसे आवास, परिवहन, कैंटीन, क्रेच आदि।
iii. खेलों तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों को बढ़ावा।
iv. भावी जीविका के लिए श्रेष्ठ अवसर।
v. वस्तुओं तथा सेवाओं की नियमित आपूर्ति।
vi. उचित कार्य दशाएँ तथा कल्याणकारी सुविधाएँ।
vii. उचित तथा सामर्थ्यानुसार मूल्यों पर वस्तुओं तथा सेवाओं की उपलब्धता।
viii. विक्रयोपरान्त उचित सेवाएं।
ix. प्राकृतिक संसाधनों तथा वन्य जीवन का संरक्षण।

1.9 पर्यावरण प्रदूषण तथा व्यवसाय की भूमिका

समाज को सुरक्षित रखने के लिए 'पर्यावरण संरक्षण' महत्वपूर्ण है। इसके लिए जरूरी है कि प्रत्येक व्यवसाय इसे हानि पहुँचाने की अपेक्षा पर्यावरण संरक्षण के लिए कदम उठाए। यहाँ हम विभिन्न प्रकार के पर्यावरण प्रदूषणों के बारे में तथा व्यवसाय में इनकी भूमिका के बारे में और अधिक अध्ययन करेंगे। पर्यावरण प्रदूषण का अर्थ है- वातावरण का अवांछित द्रव्यों से दूषित होना, जिसका सजीव तथा निर्जीव तत्वों पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

पर्यावरण प्रदूषण तीन प्रकार का होता है।

(i) वायु प्रदूषण (ii) जल प्रदूषण (iii) भूमि प्रदूषण

(i) वायु प्रदूषण

हम जानते हैं कि हम सांस के रूप में जो वायु अपने अंदर खींचते हैं उसमें विभिन्न गैसें मिली होती है। हमारा शरीर उन से अवांछित तत्वों को छान कर हमारे अस्तित्व के लिए आवश्यक तत्वों को ही अपने अंदर सुरक्षित रखता है। यह जंगल, नदी आदि प्रकृति प्रदत्त साधनों के सम्बन्ध में भी सत्य है। इस प्रकार वायु प्रदूषण का अर्थ है हवा में ऐसी अवांछित गैसों, धूल के कणों आदि की उपस्थिति, जो लोगों तथा प्रकृति दोनों के लिए खतरे का कारण बन जाए।

वायु प्रदुषण

वायु प्रदूषण के कारण : आइए, जानें कि वायु प्रदूषित कैसे होती है। वायु प्रदूषण के कुछ सामान्य कारण हैं :

i. वाहनों से निकलने वाला धूआँ।
ii. औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाला धूआँ तथा रसायन।
iii. आणविक संयत्रों से निकलने वाली गैसें तथा धूल-कण।
iv. जंगलों में पेड़ पौधों के जलने से, कोयले के जलने से तथा तेल शोधन कारखानों आदि से निकलने वाला धूआँ।

वायु प्रदूषण का प्रभाव : वायु प्रदूषण हमारे वातावरण तथा हमारे ऊपर अनेक प्रभाव डालता है। उनमें से कुछ निम्नलिखित है :

- हवा में अवांछित गैसों की उपस्थिति से मनुष्य, पशुओं तथा पंछियों को गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इससे दमा, सर्दी-खाँसी, अंधापन, श्रवण शक्ति का कमजोर होना, त्वचा रोग आदि जैसी बीमारियाँ पैदा होती हैं। लम्बे समय के बाद इससे जननिक विकृतियाँ उत्पन्न हो जाती हैं और अपनी चरमसीमा पर यह घातक भी हो सकती है।
- वायु प्रदूषण से सर्दियों में कोहरा छाया रहता है, जिसका कारण धूएँ तथा मिट्टी के कणों का कोहरे में मिला होना है। इससे प्राकृतिक दृश्यता में कमी आती है तथा आखों में जलन होती है और साँस लेने में कठिनाई होती है।
- ओजोन परत, हमारी पृथ्वी के चारों ओर एक सुरक्षात्मक गैस की परत है। जो हमें हानिकारक अल्ट्रावायलेट किरणों से, जो कि सूर्य से आती हैं, से बचाती है। वायु प्रदुषण के कारण जीन अपरिवर्तन, अनुवाशंकीय तथा त्वचा कैंसर के खतरे बढ़ जाते हैं।
- वायु प्रदुषण के कारण पृथ्वी का तापमान बढ़ता है, क्योंकि सूर्य से आने वाली गर्मी के कारण पर्यावरण में कार्बन डाइ आक्साइड, मीथेन तथा नाइट्रस आक्साइड का प्रभाव कम नहीं होता है, जो कि हानिकारक हैं।

- वायु प्रदूषण से अम्लीय वर्षा के खतरे बढ़े हैं, क्योंकि बारिश के पानी में सल्फर डाई आक्साइड, नाइट्रोजन आक्साईड आदि जैसी जहरीली गैसों के घुलने की संभावना बढ़ी है। इससे फसलों, पेड़ों, भवनों तथा ऐतिहासिक इमारतों को नुकसान पहुँच सकता है।
- ध्वनि की अधिकता के कारण भी वायु प्रदूषण बढ़ता है, जिसे हम ध्वनि प्रदूषण के रूप में जानते हैं। ध्वनि प्रदूषण का साधारण अर्थ है अवांछित ध्वनि जिससे हम चिड़चिड़ापन महसूस करते हैं। इसका कारण है- रेल इंजन, हवाई जहाज, जेनरेटर, टेलीफोन, टेलीविजन, वाहन, लाउडस्पीकर आदि आधुनिक मशीनें। लंबे समय तक ध्वनि प्रदूषण के प्रभाव से श्रवण शक्ति का कमजोर होना, सिरदर्द, चिड़चिड़ापन, उच्चरक्तचाप अथवा स्नायविक, मनोवैज्ञानिक दोष उत्पन्न होने लगते हैं। लंबे समय तक ध्वनि प्रदूषण के प्रभाव से स्वाभाविक परेशानियाँ बढ़ जाती है।

(ii) जल प्रदूषण

क्या आपने कभी दिल्ली के निकट यमुना नदी को देखा है? क्या आप गंगा सफाई परियोजना से परिचित हैं? इन दो सवालों से तुरंत हमारे दिमाग में यह बात उभरी है कि हमारी नदियों का नीर किस सीमा तक प्रदूषित हो चुका है। जल प्रदूषण का अर्थ है पानी में अवांछित तथा घातक तत्वों की उपथिति से पानी का दूषित हो जाना, जिससे कि वह पीने योग्य नहीं रहता।

जल प्रदूषण

जल प्रदूषण के कारण : जल प्रदूषण के विभिन्न कारण निम्नलिखित है:

i. मानव मल का नदियों, नहरों आदि में विसर्जन।
ii. सफाई तथा सीवर का उचित प्रबंधन न होना।
iii. विभिन्न औद्योगिक इकाइयों द्वारा अपने कचरे तथा गंदे पानी का नदियों, नहरों में विसर्जन।
iv. कृषि कार्यों में उपयोग होने वाले जहरीले रसायनों तथा खादों का पानी में घुलना।
v. नदियों में कूड़े-कचरे, मानव-शवों और पारम्परिक प्रथाओं का पालन करते हुए उपयोग में आने वाले प्रत्येक घरेलू सामग्री का समीप के जल स्रोत में विसर्जन।

जल प्रदूषण के प्रभाव : जल प्रदूषण के निम्नलिखित प्रभाव है:

- इससे मनुष्य, पशु तथा पक्षियों के स्वास्थ्य को खतरा उत्पन्न होता है। इससे टाईफाइड, पीलिया, हैजा, गैस्ट्रिक आदि बीमारियां पैदा होती हैं।
- इससे विभिन्न जीव तथा वानस्पतिक प्रजातियों को नुकसान पहुँचता है।
- इससे पीने के पानी की कमी बढ़ती है, क्योंकि नदियों, नहरों यहाँ तक कि जमीन के भीतर का पानी भी प्रदूषित हो जाता है।

पाठगत प्रश्न 1.10

I. पाठ में से उचित शब्दों का चुनाव कर निम्नलिखित वाक्यों के रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

i. हमारा व्यवहार दूसरों के प्रति _____ नहीं होना चाहिए।

ii. लोगों के वांछित कार्यों तथा गतिविधियों को समाज में _____ मिलती है।

iii. व्यवसाय संबंधी नैतिकता व्यवसाय द्वारा _____ वस्तुओं की बिक्री को मान्यता नहीं देती।

iv. सामाजिक मूल्य, सामाजिक उत्तरदायित्वों के _____ का निर्माण करते हैं।

v. सरकार को नियमित तथा ईमानदारी के साथ करों का भुगतान _____ द्वारा निर्देशित होता है।

II. निम्नलिखित का मिलान कीजिए :

	कॉलम अ		कॉलम ब
i.	पर्यावरण प्रदूषण	क)	धुएँ, धूल तथा कोहरे का मिश्रण
ii.	वायु प्रदूषण	ख)	ध्वनि प्रदूषण हेतु उत्तरदायी है।
iii.	जल प्रदूषण	ग)	वातावरण में अवांछित तत्वों की उपस्थिति से असुविधा
iv.	धुंध	घ)	हवा में गैस तथा धूल के कणों के अनुपात में असंतुलन
v.	वायुयान	ङ)	घातक तत्वों के जल में अधिक मात्रा में घुलने से जल का दूषित होना

(iii) भूमि प्रदूषण

भूमि प्रदूषण से अभिप्राय जमीन पर जहरीले, अवांछित और अनुपयोगी पदार्थों के भूमि में विसर्जित करने से है, क्योंकि इससे भूमि का निम्नीकरण होता है तथा मिट्टी की गुणवत्ता प्रभावित होती है। लोगों की भूमि के प्रति बढ़ती लापरवाही के कारण भूमि प्रदूषण तेजी से बढ़ रहा है। भूमि प्रदूषण के मुख्य कारण निम्नलिखित हैं :

भूमि प्रदूषण

भूमि प्रदूषण के कारण : भूमि प्रदूषण के मुख्य कारण हैं :

i. कृषि में उर्वरकों, रसायनों तथा कीटनाशकों का अधिक प्रयोग।

ii. औद्योगिक इकाईयों, खानों तथा खादानों द्वारा निकले ठोस कचरे का विसर्जन।

iii. भवनों, सड़कों आदि के निर्माण में ठोस कचरे का विसर्जन।

टिप्पणी

iv. कागज तथा चीनी मिलों से निकलने वाले पदार्थों का निपटान, जो मिट्टी द्वारा अवशोषित नहीं हो पाते।

v. प्लास्टिक की थैलियों का अधिक उपयोग, जो जमीन में दबकर नहीं गलती।

vi. घरों, होटलों और औद्योगिक इकाईयों द्वारा निकलने वाले अवशिष्ट पदार्थों का निपटान, जिसमें प्लास्टिक, कपड़े, लकड़ी, धातु, काँच, सेरामिक, सीमेंट आदि सम्मिलित हैं।

भूमि प्रदूषण का प्रभाव : भूमि प्रदूषण के निम्नलिखित हानिकारक प्रभाव है:

- कृषि योग्य भूमि की कमी
- भोज्य पदार्थों के स्रोतों को दूषित करने के कारण स्वास्थ्य के लिए हानिकारक
- भूस्खलन से होने वाली हानियाँ
- जल तथा वायु प्रदूषण में वृद्धि

1.10 पर्यावरण प्रदूषण में व्यवसाय की भूमिका

उपर्युक्त चर्चा के आधार पर एक बात स्पष्ट है कि चाहे वायु प्रदूषण हो, ध्वनि प्रदूषण हो, जल प्रदूषण हो या भूमि प्रदूषण, सबमें व्यवसाय की भागीदारी होती है। व्यवसाय निम्नलिखित तरीकों से पर्यावरण प्रदूषण बढ़ाता है :

i. उत्पादन इकाईयों से निकलने वाली गैसों और धुएं से;

ii. मशीनों, वाहनों आदि के उपयोग से ध्वनि प्रदूषण के रूप में;

iii. औद्योगिक इकाईयों को स्थापित करने के लिए वनों की कटाई से;

iv. औद्योगिकीकरण तथा शहरीकरण के विकास से;

v. नदियों तथा नहरों में कचरे तथा हानिकारक पदार्थों के विसर्जन से;

vi. ठोस कचरे को खुली हवा में फेंकने से;

vii. खनन तथा खदान संबंधी गतिविधियों से;

viii. परिवहन के बढ़ते हुए उपयोग से।

पर्यावरण को नियंत्रित करने में व्यवसाय की तीन प्रकार की भूमिका हो सकती है: निवारणात्मक, उपचारात्मक तथा जागरूकता।

i) **निवारणात्मक भूमिका :** इसका अर्थ है कि व्यवसाय ऐसा कोई भी कदम न उठाए, जिससे पर्यावरण को और अधिक हानि हो। इसके लिए आवश्यक है कि व्यवसाय सरकार द्वारा लागू किए गए प्रदूषण नियंत्रण संबंधी सभी नियमों का पालन करे। मनुष्यों द्वारा किए जा रहे पर्यावरण प्रदूषण के नियंत्रण के लिए व्यावसायिक इकाइयों को आगे आना चाहिए।

ii) **उपचारात्मक भूमिका :** इसका अर्थ है कि व्यावसायिक इकाइयाँ पर्यावरण को पहुँची हानि को संशोधित करने या सुधारने में सहायता करें। साथ ही यदि प्रदूषण को नियंत्रित करना संभव न हो तो उसके निवारण के लिए उपचारात्मक कदम उठा लेने चाहिए। उदाहरण के लिए वृक्षारोपण (वनरोपण कार्यक्रम) से औद्योगिक इकाईयों के आसपास के वातावरण में वायु प्रदूषण को कम किया जा सकता है।

iii) **जागरूकता संबंधी भूमिका :** इसका अर्थ है लोगों को (कर्मचारियों तथा जनता दोनों को) पर्यावरण प्रदूषण के कारण तथा परिणामों के संबंध में जागरूक बनाएँ, ताकि वे पर्यावरण को नुकसान पहुँचाने की बजाय ऐच्छिक रूप से पर्यावरण की रक्षा कर सकें। उदाहरण के लिए व्यवसाय जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन करे। आजकल कुछ व्यावसायिक इकाईयां शहरों में पार्कों के विकास तथा रखरखाव की जिम्मेदारियाँ उठा रही हैं, जिससे पता चलता है कि वे पर्यावरण के प्रति जागरूक हैं।

पाठगत प्रश्न 1.11

I. निम्नलिखित में से सत्य और असत्य कथन छांटिए :

i. कृषि में उर्वरकों, रसायनों तथा कीटनाशकों के अत्यधिक प्रयोग से वायु प्रदूषण बढ़ता है।

ii. प्लास्टिक की थैलियों के अत्यधिक उपयोग से भूमि प्रदूषण बढ़ता है।

iii. औद्योगिक इकाईयों के आसपास वृक्षारोपण से ध्वनि प्रदूषण कम होता है।

iv. भूमि प्रदूषण से हमारे देश में कृषि योग्य भूमि में वृद्धि हुई है।

v. व्यावसायिक संगठनों को पर्यावरण प्रदूषण के कारणों तथा परिणाम के प्रति जनता को जागरूक बनाना चाहिए।

II. बहुविकल्पीय प्रश्न :

i. निम्न में से कौन-सी अनार्थिक क्रिया है :
क) ग्राहक को ब्रैड बेचना
ख) एक पड़ोसी को पुराना टेलीविजन बेचना
ग) एक मित्र को एक कलम भेट करना
घ) पुनः विक्रय हेतु पुस्तकें क्रय करना

ii. निम्न में से कौन-सा आजीविका का माध्यम नहीं है :
क) व्यवसाय ख) पेशा
ग) नौकरी घ) प्रातः सैर पर जाना

iii. निम्न में से कौन-सी, व्यवसाय की विशेषता नहीं है :
क) व्यापार में माल का विनिमय
ख) एक पिता द्वारा अपने बेटे को पढ़ाना
ग) जोखिम का होना तथा आय की अनिश्चितता
घ) लाभार्जन का उद्देश्य

iv. व्यवसाय के आर्थिक उद्देश्यों में सम्मिलित नहीं है :
क) ग्राहक सृजन ख) निरंतर नवप्रवर्तन
ग) रोजगार उपलब्ध कराना घ) संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग

टिप्पणी

v. व्यवसाय के सामाजिक उद्देश्यों में सम्मिलित है :
क) समाज के सामान्य कल्याण में योगदान
ख) आर्थिक संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग
ग) ग्राहक सृजन
घ) लाभ कमाना

आपने क्या सीखा

- मनुष्य द्वारा सम्पन्न की जाने वाली क्रियाओं को मानवीय क्रियाएँ कहते हैं। ये दो प्रकार की होती हैं- आर्थिक क्रियाएँ तथा अनार्थिक क्रियाएँ। धन अर्जित करने के उद्देश्य से सम्पन्न की जाने वाली क्रियाएं आर्थिक क्रियाएं कहलाती हैं। जो क्रियाएँ सामाजिक और मनोवैज्ञानिक उद्देश्य से की जाती हैं उन्हें अनार्थिक क्रियाएँ कहते हैं।
- जीविका अर्जित करने के उद्देश्य से नियमित आधार पर की जाने वाली आर्थिक क्रियाओं को धंधा कहते हैं।
- धंधे तीन प्रकार के होते हैं : (i) पेशा (ii) नौकरी (iii) व्यवसाय
- पेशा एक ऐसा धंधा है, जिसके लिए विशेष ज्ञान और प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। हर पेशेवर व्यक्ति को पेशागत निकाय द्वारा निर्धारित आचार संहिता का पालन करना पड़ता है। हर पेशे का प्राथमिक उद्देश्य होता है, सेवा प्रदान करना।
- नौकरी एक ऐसा धंधा है, जिसमें व्यक्ति एक निश्चित आय के बदले नियमित आधार पर दूसरों के लिए कार्य करता है। उसे अपने नियोक्ता द्वारा निर्धारित नौकरी के नियमों तथा शर्तों का पालन करना पड़ता है।
- व्यवसाय एक ऐसी क्रिया है, जिसमें लाभ कमाने के उद्देश्य से नियमित आधार पर वस्तुओं अथवा सेवाओं का उत्पादन, विक्रय और विनिमय किया जाता है।
- एक निश्चित समय अथवा अवधि में एक व्यावसायिक संगठन जो प्राप्त करना चाहता है, उन्हें व्यावसायकि उद्देश्य कहते हैं।
- व्यवसाय के उद्देश्य
  - → सामाजिक उद्देश्य
  - → आर्थिक उद्देश्य
  - → मानवीय उद्देश्य
  - → राष्ट्रीय उद्देश्य
  - → वैश्विक उद्देश्य
- व्यवसाय के सामाजिक उत्तरदायित्व से अभिप्राय व्यवसाय की उन सभी जिम्मेदारियों तथा कर्तव्यों से है, जो समाज कल्याण के लिए आवश्यक हैं।
- व्यवसाय के सामाजिक उत्तरदायित्वों का महत्व बढ़ा है, क्योंकि इससे जनता में :
  - → व्यवसाय की छवि तथा साख में वृद्धि होती है।
  - → इसमें दीर्घकालिक विकास तथा स्थायित्व आता है।

→ यह अपने कर्मचारियों को संतुष्टि प्रदान करता है- जो प्रत्यक्ष रूप से उनकी उत्पादकता से संबंधित है।

→ उपभोक्ता अपने अधिकारों के प्रति जागरूक बनता है।

- प्रत्येक व्यवसाय, समाज का एक अंग है और व्यवसाय, समाज के प्रत्येक तत्व के प्रति जिम्मेदार है, जिन्हें हित समूह कहा जा सकता है। इन हित समूहों में स्वामी, निवेशक, कर्मचारी, आपूर्तिकर्ता, ग्राहक, प्रतियोगी, सरकार तथा समाज आते हैं।
- व्यावसायिक नैतिकता व्यावसायिक गतिविधियों को वांछित और न्यायोचित तरीकों से सम्पूर्ण करने के साधनों तथा विधियों का सुझाव देती है।
- सामाजिक मूल्य व्यवसाय संबंधी अच्छी और वांछित व्यावसायिक गतिविधियों के आचरण की ओर संकेत करते हैं जिनसे समाज का कल्याण हो सके।
- वातावरण में अवांछित तत्वों के घुलमिल जाने से पर्यावरण प्रदूषण बढ़ता है, जिसका प्रभाव मनुष्यों, जीवों तथा पेड़-पौधों पर भी पड़ता है।
- पर्यावरण प्रदूषण तीन प्रकार का होता है :
  i. वायु प्रदूषण
  ii. जल प्रदूषण तथा
  iii. भूमि प्रदूषण।
- प्रत्येक व्यवसाय प्रदूषण नियन्त्रण में तीन प्रकार की भूमिकाएँ निभा सकता है :
  → निवारणात्मक, उपचारात्मक तथा जागरूकता संबंधी।

पाठांत प्रश्न

1. आर्थिक तथा अनार्थिक क्रियाओं के दो-दो उदाहरण दीजिए?
2. निम्नलिखित आधारों पर आर्थिक तथा अनार्थिक क्रियाओं में अंतर स्पष्ट कीजिए:
   i. उद्देश्य ii. परिणाम
3. धंधे से क्या अभिप्राय है?
4. नौकरी की किन्हीं दो विशेषताओं को समझाइए।
5. पेशे की किन्हीं दो विशेषताओं की व्याख्या कीजिए।
6. 'व्यवसाय' शब्द को परिभाषित कीजिए।
7. जब कोई व्यक्ति बढ़ईगिरी करता है तो हम क्यों कहते हैं कि यह उसका रोजगार है?
8. यदि कोई मोची अपने लिए जूते बनाता है तो वह व्यवसाय नहीं करता। क्यों?
9. व्यवसाय की मुख्य विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
10. व्यवसाय का क्या अर्थ है? व्यवसाय की किन्हीं दो विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
11. व्यवसाय किस प्रकार पेशे से भिन्न है? लगभग 60 शब्दों में लिखिए।
12. उदाहरण देते हुए व्यावसायिक क्रियाओं की विस्तृत श्रेणियों की चर्चा कीजिए।
13. ऐसे किन्हीं तीन प्रकार के धंधों का वर्णन कीजिए, जिनमें साधारणतया व्यक्ति संलग्न होते हैं।

टिप्पणी

14. यदि किसी लेन-देन में नियमितता नहीं है तो उसे व्यवसाय नहीं कहेंगे। क्या आप इस कथन से सहमत हैं? अपने उत्तर के समर्थन में कारण दीजिए।
15. व्यवसाय में आय की अनिश्चितता होने पर भी व्यवसायी इसमें धन क्यों विनियोजित करना चाहते हैं?
16. 'लाभ अर्जित करना व्यवसाय का मुख्य उद्देश्य होता है' कथन की व्याख्या कीजिए।
17. व्यवसाय के आर्थिक उद्देश्यों की व्याख्या कीजिए।
18. व्यवसाय के सामाजिक उद्देश्यों की सूची बनाइए।
19. व्यवसाय के राष्ट्रीय उद्देश्यों के महत्व के बारे में बताइए।
20. व्यवसाय के मानवीय उद्देश्यों का उल्लेख कीजिए।
21. व्यवसाय के वैश्विक उद्देश्यों की व्याख्या कीजिए।
22. व्यवसाय के सामाजिक उत्तरदायित्वों से क्या तात्पर्य है ?
23. व्यवसाय की दैनिक गतिविधियों को प्रभावित करने वाले हित समूहों की सूची बनाइए।
24. व्यवसाय को समाज के प्रति क्यों उत्तरदायी होना चाहिए? कोई तीन कारण बताइए।
25. ग्राहकों के प्रति व्यवसाय के उत्तरदायित्वों के बारे में बताइए।
26. किस प्रकार व्यवसाय सरकार के प्रति उत्तरदायी होता है?
27. पर्यावरण प्रदूषण की परिभाषा दीजिए तथा इसके प्रकार भी बताइए।
28. वायु प्रदूषण के विभिन्न कारणों पर प्रकाश डालिए।
29. वायु प्रदूषण के किन्हीं तीन प्रभावों का उल्लेख कीजिए।
30. जल प्रदूषण के क्या प्रभाव हैं?
31. व्यवसाय किस प्रकार से पर्यावरण प्रदूषण को बढ़ाता है। किन्हीं पाँच बिन्दुओं का उल्लेख कीजिए।
32. पर्यावरण प्रदूषण के निवारण में व्यवसाय की भूमिका का विवेचन कीजिए।
33. ब्रिटिश शासन में हुई उन महत्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन कीजिए, जिन्होंने भारतीय व्यापार को प्रभावित किया।
34. ''भारत ने विश्व के व्यापार में विशेष योगदान दिया है''। इसके समर्थन में किन्हीं 4 योगदानों का वर्णन करो।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

1.1 **I.** (i) सही (ii) गलत (iii) सही (iv) सही (v) गलत

II. (i) अनार्थिक (ii) आर्थिक (iii) अनार्थिक (iv) अनार्थिक (v) आर्थिक (vi) अनार्थिक (vii) आर्थिक

1.2 **I.** (i) आर्थिक क्रिया (ii) विशेष ज्ञान (iii) नौकरी (iv) आचार संहिता (v) नियोक्ता

II. (i) ख (ii) घ (iii) क (iv) ग

1.3 **I.** (i) सहमत (ii) असहमत (iii) असहमत (iv) सहमत (v) सहमत (vi) असहमत (vii) असहमत

II. (i) गलत (ii) गलत (iii) सही (iv) गलत (v) सही (vi) सही

1.4 (i) असत्य (ii) सत्य (iii) असत्य (iv) असत्य (v) असत्य

1.5 (i) गलत (ii) सही (iii) गलत (iv) गलत (v) गलत

1.6 (i) सही (ii) सही (iii) गलत (iv) गलत (v) गलत

1.7 (i) सामाजिक (ii) निर्यात (iii) नियमित (iv) कर्मचारियों

1.8 (i) समाज (ii) जिम्मेदारियां (iii) घटिया (iv) ऐच्छिक (v) छवि (vi) वैश्वीकरण (vii) सामाजिक उत्तरदायित्व (viii) हतोत्साहित

1.9 समाज (i), (iii), (ix)
ग्राहक (v), (vii), (viii)
कर्मचारी (ii), (iv), (vi)

1.10 **I.** (i) हानिकारक (ii) पहचान/मान्यता (iii) मिलावटी (iv) आधाार (v) व्यवसायिक नैतिकता

II. (i) ग (ii) घ (iii) ङ (iv) क (v) ख

1.11 **I.** (i) असत्य (ii) सत्य (iii) असत्य (iv) असत्य (v) सत्य

II. (i) ग (ii) घ (iii) ख (iv) ग (v) क

आपके लिए क्रियाकलाप

- अपने आसपास के दस कामकाजी व्यक्तियों को चुनिए और देखिए कि वे अपनी आजीविका अर्जित करने के लिए क्या करते हैं। उनकी क्रियाओं को व्यवसाय, पेशा और नौकरी के आधार पर वर्गीकृत कीजिए।
- आप जिस भी दुकानदार या व्यवसायी को जानते हैं उससे बात कीजिए कि :
  - → वह किस प्रकार की वस्तुओं और सेवाओं का लेन-देन करता है?
  - → उसने किस प्रकार के संसाधनों में निवेश किया है, जैसे- भूमि, श्रम, पूँजी आदि?
  - → उसे लाभ कमाने में किन जोखिमों और अनिश्चितताओं का सामना करना पड़ता है?
- पुस्तकों पत्रिकाओं व समाचार पत्रों से वर्तमान समय में भारतीय विदेशी व्यापार की वस्तुओं के विषय में सूचना एकत्रित कीजिए। कम से कम पांच बंदरगाहों के नाम भी एकत्रित कीजिए जिनका उपयोग विदेश व्यापार के लिए होता है।
- आप आस-पास के किसी दुकानदार अथवा व्यवसासियों को देखिए और पता कीजिए कि उनके व्यवसाय चलाने के पीछे क्या उद्देश्य हैं? इस पाठ में पढ़े उद्देश्यों के आधार पर उनका वर्गीकरण कीजिए।
- ऐसे दो सामाजिक उत्तरदायित्वों की पहचान कीजिए जिनकी पूर्ति समाज कल्याण के लिए आपके क्षेत्र के दुकानदारों द्वारा की जानी चाहिए।
- क्या आपका नगर पर्यावरण प्रदूषित है? यदि हाँ, तो प्रदूषण के कारणों की एक सूची बनाइए और बताइए कि प्रदूषण को रोकने के लिए क्या कदम उठाए जा सकते हैं।